IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बदलते परिवेश की स्वतंत्र नारी कथा-साहित्य के आईने में

डा. सीमा कुमारी

पी.एच.डी.

ल0ना0मि0वि0, कामेश्वरनगर, दरभंगा

बदलते परिवेश की वजह से महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूरकता आई और विभिन्न आन्दोलनों का सहारा लेकर अपने अधिकारों को लिया। बदलते हुए सामाजिक सन्दर्भों का ही परिणाम है कि नारी के पत्नी, प्रेयसी, गृहिणि के स्वरूप को आज मानवतावादी मूल्य भावनाशील दृष्टि और सामाजिक सम्पन्नता की कसौटी पर परखा जाता है। नारी-मुक्ति आन्दोलन महिलाओं के बदलते हुए सन्दर्भों से संबंधित सामाजिक आन्दोलन है। बदलते समय सन्दर्भ के साथ भारतीय समाज में नारी के व्यक्तित्व का विकास साहित्य का विषय बनते रहा है। नारी जागरण, नारी मुक्ति आन्दोलन और नारी सशक्तिकरण आदि ने भारतीय समाज की जड़ता को झकझोर कर रख दिया है। हिन्दी कथा साहित्य ने नारी के बदलते स्वरूप के उस पक्ष को सामने रखा है जिसमें उसकी समझ और संवेदना की प्रधानता है। समझ और जागरूकता ने उसे निर्णय की साझेदारी तक पहुँचाया है, तो संवेदना ने इसे व्यापकता दी है।

''नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पगतल में,

पीयूष-स्त्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।''1

नारी की यह छवि अनादिकाल से पुरूष समाज के मनः पटल पर अंकित है। किन्तु पुनरूत्थान आन्दोलन के फलस्वरूप नारी, निन्द की पात्री तथा भोग की वस्तु न होकर, पूजा की अधिकारिणी बनी। यह बदलते हुए सामाजिक सन्दर्भों का ही परिणाम है कि नारी के पत्नी, प्रेयसी, गृहिणी के स्वरूप को आज मानवतावादी मूल्य भावनाशील दृष्टि और सामाजिक सम्पन्नता की कसौटी पर परखा जाता है। मानव सभ्यता के विकास और जरूरतोपयोगी वस्तुओं और पद्धतियों का विकास हुआ और विकास के इस दौर में नारी-शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की गयी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान महिलाएँ परिस्थितिवश घरों से बाहर आयी। यहीं से नारी में चेतना की बीज पड़े और समयानुकूल वह पल्लवित होने लगी।

बदलते परिवेश की वजह से महिलाओं में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता आई और विभिन्न आन्दोलनों का सहारा लेकर अपने अधिकरों को लिया। नारी-मुक्ति आन्दोलन महिलाओं के बदलते हुए सन्दर्भों से संबंधित सामाजिक आन्दोलन है। इसी सन्दर्भ में जून 1975 में मैक्सिकों में 130 देशों की 6000 प्रमुख महिलाओं का एक एक वृहद् सम्मेलन अपने ढंग का अनोखा प्रयास था।

भारतीय नारी का मुक्ति संघर्ष पश्चिम के मुक्ति संघर्ष से बिलकुल अलग रहा है, तथापि वहाँ नारी अपने जातीय अधिकारों के लिए लड़ी और आज भी लड़ रही है। भारतीय नारी पुरूष की प्रतिद्वन्दी नहीं, सहयोगिनी के रूप में उसके कंधे के साथ कंधा मिलाते हुए देश की आजादी के लिए, राष्ट्र की मुक्ति के लिए लड़ी और आज भी उस आजादी को बनाये रखने के लिए लड़ रही है। गाँधी-युग में नारी बौद्धिक धरातल पर पुरूष के समकक्ष मानी गयी, नारी ने यह महसूस किया कि पति-भक्ति और परिवार ही उसकी सीमा नहीं है वरन् राष्ट्र, देश,

जाति और समाज में भी उसका यह योग अपेक्षित है। स्त्री-पुरूषों के सम्मिलित प्रयासों और अथक परिश्रमों के फलस्वरूप 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई और जब 1950 में स्वतंत्र भारत का संविधान कार्यान्वित किया गया, तो उसमें पुरूष और स्त्री में बिना किसी भेदभाव के समस्त

भारतवासियों को समान स्तर पर सामाजिक राष्ट्रीय एवं राजनीतिक जीवन की स्वीकृति मिली और मानवीय अधिकारों को प्राथमिकता देने वाले मौलिक अधिकारों को प्रश्रय मिला।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् नारी के व्यक्तित्व में त्रिकोणात्मक स्वरूप दिखलाई दिया। एक ओर उसमें समस्त घर की जिम्मेदारियाँ आयीं, दूसरी ओर बाह्य परिवेश से उत्पन्न नवीन स्थितियाँ और वैयक्तिक चेतना के परिणामस्वरूप अस्मिता की तलाश ; इससे नारी का व्यक्तित्व, घर समाज और स्वयं तीनों धरातलों पर जुड़ा राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक तथा वैयक्तिक कारणों से नारी के स्वरूप में परिवर्तन आया। समाज नारी के विविध रूपों से अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावशाली रहा।

गोपाल सिंह नेपाली ने नारी के अंदर छिपी शक्ति को उभारते हुए उसे राष्ट्र-यज्ञ में पुरूष की सहायिका एवं प्रेरणा के रूप में याद करते हुए कहा भी है-

''तू चिनगारी बनकर उड़ री, जाग-जाग मैं ज्वाला बनूँ
तू बन जा हहराती गंगा, मैं झेलम बेहाल बनूँ
आज वसन्ती चोला तेरा, मैं भी सज लूँ लाल बनूँ
तू भगिनी बन, क्रांति कराली, मैं भाई विकराल बनूँ''2

आज नारी की इस अप्रतिम और अलौकिक अवधारणा तथा उनके आराध्य रूप को पुरूष समाज भी स्वीकार करते हैं।

देश तो आजाद हुआ, पर स्त्रियों के पैरों में दासता की बेरी लटकती रही। चैखट से बाहर कदम रखना उसके लिए मुश्किल लग रहा था। कुछ ही प्रतिशत वह भी निम्नवर्गीय परिवारों की स्त्रियाँ बाहर मजदूरी करने निकलती थी। वस्तुतः उसकी आजादी की तुलना किसान से की जा सकती है। ''जिस तरह किसान की आजादी उसकी जमीन से आती है उसी प्रकार स्त्री की आजादी उसके अपने घर परिवार से आती है। यह आजादी उसे मिलनी चाहिए।''3

स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् नारी के प्रति कहानीकारों का दृष्टिकोण बदला और उसके व्यक्तित्व के साथ हिन्दू आदर्श समाप्त हुए हैं और उसका अपना व्यक्तित्व और उससे सम्बद्ध अपेक्षाएँ प्रत्यक्ष रूप से जुड़ती गयी है। ''भारतीय समाज में स्वतंत्रता के बाद अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है, परन्तु उन महत्वपूर्ण परिवर्तनों में सर्वाधिक आकर्षक और साहसिक बदलाव स्त्री का घर की चारदीवारी से बाहर निकलना और बाहरी दुनिया की हलचल में शामिल होना है।''4 नारी अपने अस्मिता की तलाश करती हुई दिखलाई देती है। युगों बाद नारी अपनी खोयी पहचान अपनी शक्ति वापस करना चाहती है। इस सम्बन्ध में मार्कण्डेय पुराण की दुर्गा सप्तशती के चतुर्थ अध्याय का पाँचवा श्लोक दर्शनीय है।

जिसमें ऋषि कहते है-

''या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्थ लज्जा
तां त्वां नतः स्म परिपालय देवि विश्वम्।''5

अर्थात् हे देविः इसलिए मैं तुमको प्रणाम करता हूँ कि तुम सुकृतियों के घर में स्वयं विराजमान रहती हो और पापियों के घर में दरिद्रा बन जाती हो। बुद्धिमानों की बुद्धि सज्जनों की श्रद्धा और संस्कारी परिवार की लज्जा तुम्हीं हो। इन्हीं रूपों में तुम विश्व की रक्षा करो। यह मेरी विनम्र प्रार्थना है। वस्तुतः यही शक्ति है जो संसार की समस्त नारियों में विद्यमान है।

कहानीकारों का दृष्टिकोण बदला उनकी नजर में नारी अस्तित्व का स्वरूप कुछ भी हो लेकिन इतना निश्चित है कि वह केवल विचार की वस्तु नहीं है, वरन् कुछ अनुभव की जाने वाली वस्तु है।

हिन्दी कथाकारों में हिमांशु जोशी प्रेम और भावुकता तथा सामाजिक यथार्थ के अन्वेषक जाने जाते हैं। सैकड़ों कहानियों को लिखकर वे एक बड़े कथाकार के रूप में उदीयमान हुए।

'कोई एक मसीहा' की सामू बेन मध्यवर्गीय स्त्री है जो आश्रम चलाती है। छोटी ई कॉलेज शिक्षिका है। 'उसका तारा' में हरकू की वृद्धा माँ गाँव की गँवार स्त्री हैं वह उच्च कुल की है, लेकिन आर्थिक विपन्नता के कारण निम्नवर्गीय जीवन जीती है। 'लकीर की परछाई' में सुजाता टाईपिस्ट की नौकरी करती है उसी तरह 'उसका सच' की रत्नम प्राईवेट दफ्तरों में नौकरी करती है। ये सभी नारी कहीं न कहीं अपने लक्ष्य को पाने के लिए समर्पित है।

भारत में आधुनिकता का संस्पर्श यूरोपीय सभ्यता के सम्पर्क से होता है। ज्यों-ज्यों वैज्ञानिक तकनीकी का विकास होता गया मनुष्य बुद्धिवादी होता गया। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भारतीय कला साहित्य भी प्रभावित होता गया। पुरूषों की तरह स्त्रियों के रहन-सहन में परिवर्तन आया। हैसियत से ज्यादा संपन्न बनने की कल्पना ने उड़ान भरने की प्रेरणा दी। यह सही है कि परिवर्तन के इस युग में स्त्रियाँ भी बढ़-चढ़कर आगे रहना चाहती हैं। "सामाजिकता में उचित परिवर्तन और विकास के परिप्रेक्ष्य में ही दलित साहित्य या स्त्री लेखन या किसी भी व्यक्तित्व या सामाजिकता के खंड का अस्तित्व है और इसे इसी रूप में समझने की आवश्यकता है।"6

हिमांशु जोशी ने ऐसे नारी पात्रों का चित्रण बड़े स्वाभाविक रूप से किया है जो अति महत्वाकांक्षिणी और आधुनिक चकाचैंध से प्रभावित है। 'समय साक्षी है' उपन्यास में मेधना राजनीतिज्ञों के संग रहकर विलासिनी बन जाती है। आगे बढ़ने की होड़ में राजनीतिज्ञों के आगे खुद को समर्पित कर देती है। आरंभ में भले ही किसी प्रकार की मजबूरी रही हो, लेकिन इंसान जब साधारण मजबूरी में फँसकर संभल नहीं पता तो बड़ी मजबूरियाँ उसकी बढ़ती चली जाती है। 'नई बात' कहानी में केतकी का गाँव से ही चाल-चलन बिगड़ जाता है। पुरूषों के प्रलोभन में फंस जाती है। पहनने-ओढ़ने का शौक चरम पर है, लेकिन अभावग्रस्तता ने उसके भीतर असंतोष पैदा कर दिया है। दूसरों की देखा-देखी कर वह दिल्ली चली आती है जहाँ उसकी वितृष्णा और भी बढ़ जाती है। 'नाव पर बैठे हुए लोग' में ईना घर की माली हालत पर जरा भी चिंता नहीं करती वह खुली छत पर बराबर घूमती है, लड़कों से हँसती बोलती है। किसी के दिए हुए कपड़े-लत्ते भी पहनती है।

नारी-स्वातन्त्र्य के इतने शोर के बावजूद संस्कारों से बँधी नारी आज भी जहाँ की तहाँ पीड़ित खड़ी है। अन्तर है तो केवल इतना कि आज वह अपने अहं को कसकर पकड़े है इसलिए संघर्ष है, त्रास है, मानसिक उद्वेलन है। अस्तित की पुकार लगाती नारी विवाह के बाद आज भी न केवल पति के फौलादी व्यक्तित्व से टकराकर चूर हो रही है, वरन् 'कगार की आग' की गोमती की तरह मूक समझौता भी कर रही है।

सच कहा जाए तो बदलते समय संदर्भ के साथ भारतीय समाज में नारी के व्यक्तित्व का विकास साहित्य का विषय बनते रहा है। नारी जागरण, नारी मुक्ति आंदोलन और नारी सशक्तिकरण आदि ने भारतीय समाज की जड़ता को झकझोर कर रख दिया है। हिन्दी कथा-साहित्य ने नारी के बदलते स्वरूप के उस पक्ष को सामने रखा है जिसमें उसकी समझ और संवेदना की प्रधानता है। समझ और जागरूकता ने उसे निर्णय की साझेदारी तक पहुँचाया है, तो संवेदना ने इसे व्यापकता दी है। 'किसी एक' की अनाम महिला इसी को प्रमाणित करती है।

संदर्भः

1. कामायनी: श्रद्धा सर्ग
2. गोपाल सिंह नेपाली द्वारा रचित काव्य
3. अतिथि सम्पादक: वर्तमान साहित्य, मार्च 2008, पृ0 10
4. सरोजनी वि0 आर्य: 'कामकाजी नारी का द्वन्द्व और यथार्थ' 'भाषा' नवम्बर-दिसम्बर, 1992, पृ061
5. मार्कण्डेय पुराणः दुर्गा सप्तशती: चतुर्थ अध्याय, पाँचवा श्लोक
6. हिमांशु जोशी: 'अरण्य' पृ0 21